चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ......The Tribune......
दिनांक 11.9.2019 पृष्ठ सं. ...2... कॉलम ...7-8...

FINNISH COMPANY, HAU SIGN PACT

Hisar: Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (HAU), Hisar, which is dedicated to the uplift of farmers, has taken one more initiative by signing a memorandum of understanding (MoU) with Fortum India, a leading clean energy company that provides its customers electricity and smart solutions to improve resource efficiency. The MoU was signed in the presence of Prof KP Singh, Vice Chancellor, HAU, Hisar. On behalf of Fortum India Pvt. Ltd. Sanjay Aggarwal, managing director, and on behalf of the the HAU Dr SK Sehrawat, director of research, signed the pact. Prof Singh said, "By signing the MoU, we will be able to implement innovative technologies for the conversion of crop residue in eco-friendly, technically efficient and economically viable way."

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम दैनिक जागरण
दिनांक 12.9.2019 पृष्ठ सं. 18 कॉलम 2-8

पहले युवा कहते थे नौकरी बताना, अब बिजनेस में कमा रहे करोड़ों

जल संरक्षण पर आधारित रहा एचएयू का कृषि मेला, कई राज्यों से आए किसान

जागरण संवाददाता, हिसार : पहले आयोजित होने वाले कृषि मेलों में आप किसानों की समस्याएं और वैज्ञानिकों के समाधान सुनते रहे होंगे, मगर बुधवार को एचएयू में आयोजित कृषि मेला कुछ अलग प्रकार का रहा। यहां किसानों को पैदावार पर नहीं बल्कि कृषि को एक उद्यम बनाने की दिशा पर आधारित रहा। जहां छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा किसान वैज्ञानिकों से नई तकनीक और कृषि के जरिए उद्योग स्थापित करने के बारे में जानना चाहता है। ऐसा माहौल एचएयू के इन्कयूबिशन सेंटर के खुल जाने के बाद संभव हुआ।

यहां कुलपति प्रो. केपी सिंह ने बताया कि पहले युवा एचएयू में नौकरी की बात करते थे मगर अब कहते हैं कि ऐसा कौन सा काम कर सकते हैं कि उद्योग स्थापित हो। इस बात को उन्होंने साबित भी किया है। दरअसल एचएयू में बुधवार को रबी का दो दिवसीय कृषि मेला लगा है। इसका शुभारंभ सांसद बृजेंद्र सिंह तो विशिष्ट अतिथि विधायक डॉ. कमल गुप्ता रहे। इस वर्ष विश्वविद्यालय द्वारा यह कृषि मेला जल संरक्षण (जनशक्ति फॉर जलशक्ति) विषय पर है। मेले में पहले दिन 36 हजार से अधिक किसानों की उपस्थिति दर्ज की गई।

सांसद बृजेंद्र सिंह ने बताया कि हमें फसल चक्र में ऐसी फसलों को शामिल करना होगा जो कम पानी से अधिक पैदावार दे सकें।

हकृवि में कृषि मेले के दौरान खरीदारी करती छात्राएं। • जागरण

हकृवि में दो दिवसीय कृषि मेला (रबी) के उद्घाटन के बाद मेले का अवलोकन करते सांसद बृजेंद्र सिंह, विधायक डा. कमल गुप्ता, कुलपति प्रो. केपी सिंह व अन्य। • जागरण

46 लाख रुपये से अधिक के बिके बीज

मेले में जहां किसानों ने गेहूं, जौ, सरसों, तौरिया, चना, मेथी, मसूर, बरसीम, जई और मक्का की उन्नत किस्मों के लगभग 46.33 लाख रूपए के बीज, एक लाख पांच हजार रूपए के फल वाले पौधे, तथा 37 हजार रूपए का कृषि साहित्य खरीदा। इसके अतिरिक्त मेले में मिट्टी व पानी जांच सेवा का लाभ उठाते हुए किसानों ने मिट्टी के 99 तथा पानी के 160 नमूनों की जांच करवाई।

शहरवासी घर में खीरे की मदद से उगा सकते हैं लौकी

किसान सब्जियों और फलों की कर सकते हैं ब्रांडिंग

हिसार : उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान और पंजाब से बुधवार को 36 हजार किसानों ने एचएयू और लुधियाना के द्वारा लगाए गए कृषि मेल में भाग लिया, जिसमें किसान ही नहीं बल्कि शहरवासियों के लिए भी एचएयू के वैज्ञानिकों ने बहुत कुछ संभावनाओं को प्रस्तुत किया। घर के छोटे से एरिया में सब्जियां उगाने के नए तरीके लोगों ने सीखे तो किसानों का ध्यान नई तकनीक और फलों व सब्जियों पर अधिक रहा। यहां लोगों को बताया गया कि कैसे वह घर में खीरे की मदद लेकर लौकी उगा सकते हैं। इसके लिए उन्हें किसी प्रकार के फर्टीलाइजर या दवाओं का प्रयोग नहीं करना।

लौकी के पौधे को खीरे की मदद से ग्राफ्टिंग तकनीक लगाकर खेती की गई। • जागरण

पढ़िए.... नए प्रयोग, रिसर्च, तकनीक के एंगल से आपके लिए 3 नई जानकारियां

ऐसे खीरे से उगा सकते हैं लौकी

लौकी की जड़ों पर खीरे की जड़ ग्राफ्टिंग तकनीकी से लगाने के बाद आप लौकी की अच्छी पैदावार कर सकते हैं। लौकी में अक्सर बीमारियों का खतरा रहता है। ऐसे में यह तकनीक प्रयोग की तो बीमारियां भी काफी कम होंगी। इस काम को शहर में रहने वाले लोग अच्छे से कर सकते हैं क्योंकि इसके लिए अधिक जगह की आवश्यकता भी नहीं होती। इस तकनीक में पौधे को काटकर बीच में दूसरे पौधे को लगा दिया जाता है।

नए प्रयोग

फसलों की पैदावार अधिक, बीमारियों पर लगाम

किसानों को सबसे अधिक नुकसान मौसम के बदलाव से आने वाली बीमारियों से होता है। यह फसल की गुणवत्ता को तो कम करता है साथ ही पैदावार को भी घटा देता है। एचएयू इस बार किसानों को ऐसे बीज मुहैया कराएगा, जिनमें पैदावार अधिक होगी और बीमारियों पर लगाम लगाई जाएगी। हाल ही में गेहूं आदि फसलों के बीज जारी करने के बाद यह सिद्ध कर चुके हैं।

रिसर्च

सोलर एनर्जी से गन्ने का रस और करारे चिप्स

एचएयू के छात्रों ने सोलर एनर्जी से गन्ने का रस निकालने की मशीन बनाई है। इसके लिए आपको अधिक रुपये देने की जरूरत भी नहीं है। करीब 10 हजार रुपये में सोलर एनर्जी के माध्यम से कहीं भी इस मशीन का लगाया जा सकता है। इसके साथ ही चिप्स या दूसरे खाद्य पदार्थों को धूप में सुखाया जा सकता है।

तकनीक

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ..... दैनिक भास्कर .....

दिनांक 12.9.2019 पृष्ठ सं. ...1..... कॉलम ...2-3.....

एचएयू मेले में खरीदे उम्मीदों की खेती के बीज

हिसार | बलियाला गांव के 81 वर्ष के किसान महावीर सिंह एचएयू में आयोजित कृषि मेले में बीज लेने के लिए पहुंचे। उन्होंने बताया कि बीज बहुत अच्छा मिलता है। यहां खेती के तरीकों की प्रक्रिया भी सही समझाते हैं और बार-बार आते रहते हैं।

(संबंधित खबर पेज- 6 पर)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम दैनिक भास्कर
दिनांक 12.9.2019 पृष्ठ सं. 6 कॉलम 1-8

दो दिवसीय कृषि मेला शुरू • एचएयू में कई प्रदेशों से पहुंचे किसान, जल संरक्षण और तकनीक से जुड़ी कई स्टॉलें लगीं

कम पानी में ज्यादा सिंचाई और फसल को कीटों से बचाने के जाने तरीके

कृषि के विकास के लिए किसानों और कृषि वैज्ञानिकों में तालमेल जरूरी : प्रो. केपी सिंह

भास्कर न्यूज | हिसार

एचएयू में जल संरक्षण (जनशक्ति फॉर जलशक्ति) थीम पर आयोजित रबी सीजन के कृषि मेले के पहले दिन किसानों में खासा उत्साह देखने को मिला। 39.4 डिग्री टेम्परेचर और उमस भरा मौसम होने के बावजूद न्यू टेक्नोलॉजी को जानने के लिए कई प्रदेशों से किसान मेले में पहुंचे। देश-विदेश में बनी टेक्नोलॉजी को देखने के लिए स्टॉलों पर किसानों की भीड़ रही। इसमें युवा किसानों की भी अच्छी भागीदारी रही।

किसानों को यूनिवर्सिटी के स्टूडेंट्स द्वारा लगाई गई कई स्टॉलों के माध्यम से जल संरक्षण की तकनीकों को विस्तार से समझाया। जिसमें फव्वारा, पाइप लाइन, टपका सिंचाई, नाली विधि जैसी कई टेक्निक्स को बताया। किसानों ने मेले में आगामी रबी फसलों के लिए बीजों की खरीदारी की। साथ ही खेती से जुड़ी विभिन्न समस्याओं के सुझाव भी वैज्ञानिकों से लिए। वहीं मिट्टी व पानी जांच का लाभ उठाते हुए बीजों को जांचने की विधियां भी किसानों ने जानी। कृषि मेला का शुभारंभ हिसार के लोकसभा सांसद बृजेंद्र सिंह ने किया। मेले में हिसार के विधायक डॉ. कमल गुप्ता विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। एचएयू के वीसी प्रो. केपी सिंह व कृषि वैज्ञानिक मौजूद रहे। इस अवसर पर कपास बुलेटिन व जर्नल ऑफ रिसर्च का भी विमोचन भी किया गया।

सांसद बृजेंद्र सिंह ने कहा कि अधिक पैदावार फव्वारा सिंचाई, टपका सिंचाई व अन्य जल संरक्षण तकनीक का प्रयोग कर कृषि कार्यों में कम जल का प्रयोग करके अधिक पैदावार ले सकते हैं। सांसद बृजेंद्र सिंह ने कहा कि हरियाणा के 22 जिलों में से 19 जिले ऐसे हैं जिनमें भूमिगत जल का स्तर 20-60 मीटर नीचे जा चुका है। हरियाणा के 128 में से 78 ब्लॉक डार्क जोन में आ चुके हैं, इन ब्लॉक्स में भूमिगत जल का जरूरत से ज्यादा दोहन हुआ है। वर्तमान में पानी का खेती में सदुपयोग व अन्य तकनीक जिनके द्वारा कम पानी से अधिक पैदावार ली जा सकती हो बहुत ही आवश्यक है। हमें फसल चक्र में ऐसी फसलों को शामिल करना होगा जोकि कम पानी से अधिक पैदावार दे सकें। इससे हम राज्य के जल संसाधनों को लंबे समय तक बनाए रख सकते हैं।

बृजेंद्र सिंह ने किसानों की आमदनी दोगुणा करने के लिए उनसे कृषि में विविधिकरण लाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि किसानों को आमदनी बढ़ाने के लिए खाद्यान्न उत्पादन के साथ बागवानी, पशुपालन, सब्जी उत्पादन, मछली पालन आदि को भी शामिल करना होगा।

हिसार के विधायक डॉ. कमल गुप्ता ने किसानों की आमदनी दोगुणा करने के लिए किसानों के हित में सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं पर प्रकाश डाला। इसमें मुख्य रूप से फसल बीमा योजना, भावांतर भरपाई योजना, प्रधानमंत्री किसान सम्मान योजना, मेरी फसल मेरा ब्यौरा शामिल है। मृदा स्वास्थ्य कार्ड स्कीम का अधिक से अधिक लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया।

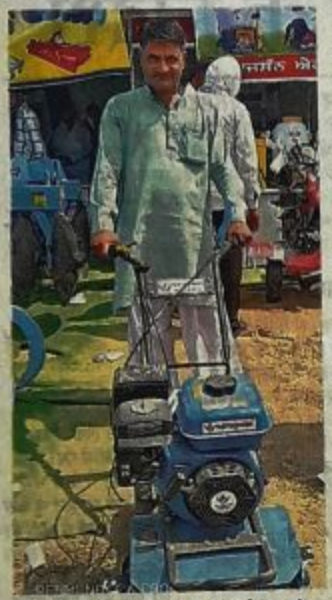

कृषि मेले में 40 किलो भार के मिनी ट्रैक्टर को देखते हुए किसान।

किसानों में टिश्यू कल्चर का बढ़ा इंट्रेस्ट

: किसान मेले में जहां उन्नत बीजों की खरीदारी में भारी इंट्रेस्ट दिखा तो वहीं किसान खेती की नई तकनीकों पर ध्यान देते नजर आए। इसमें टिश्यू कल्चर व मत्स्य पालन की जानकारी के लिए स्टॉल्स पर काफी भीड़ देखने को मिली। एचएयू के साइंटिस्ट ने बताया कि टिश्यू कल्चर में किसानों के बढ़ते इंट्रेस्ट के कारण वह इस विधि से निर्मित 12 से 13 लाख प्लांट किसानों को दे चुके है। इस तकनीक में पौधे के उतकों का एक छोटा सा टुकड़ा लेकर उसे एक जेली में रखा जाता है। इस जेली में खास तौर पर पोषक तत्व और प्लांट हार्मोन मिलाए जाते हैं। पौधों के टिश्यू में तेजी से विभाजन होकर नया पौधा बनने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है।

कृषि के विकास के लिए किसानों और कृषि वैज्ञानिकों में तालमेल जरूरी : प्रो. केपी सिंह

एचएयू के वीसी प्रो. केपी सिंह ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि कृषि के विकास के लिए किसानों और कृषि वैज्ञानिकों के बीच तालमेल बहुत आवश्यक है। कृषि मेला का मकसद भी यही है कि किसान कृषि वैज्ञानिकों से मिलकर नई कृषि प्रौद्योगिकी की जानकारी ले सकें और अपनी कृषि संबंधी समस्याओं का उनसे समाधान प्राप्त कर सकें। उन्होंने कहा कि फसलों के उत्पादन में विभिन्न आधुनिक तकनीक अपनाकर जल को बचाया जा सकता है। उन्होंने बताया कि कृषि क्षेत्र में युवाओं के लिए स्वरोजगार पैदा करना समय की मांग है। छोटे-बड़े कृषि आधारित उद्योगों का जाल बिछना चाहिए ताकि ज्यादा से ज्यादा युवाओं को मौका मिले। विश्वविद्यालय ने इस दिशा में ग्रामीण युवाओं को उद्यमशीलता के लिए प्रेरित करने के लिए एग्री बिजनेस इन्क्यूबेशन सेंटर स्थापित किया है जोकि ग्रामीण युवा रोजगार मांगने की बजाय रोजगार पैदा करने वाला बने। कुलपति प्रो. सिंह ने एक ऐसे युवा किसान का उदाहरण देते हुए बताया कि जिसने एग्रीक सेंटर से जुड़कर बायो फर्टिलाइजर पर काम शुरू करके अपनी कंपनी का टर्नओवर एक करोड़ से अधिक का कर लिया है तथा आगे पांच करोड़ तक का टर्नओवर करने का लक्ष्य है। अब वह युवा स्वरोजगार अपनाकर दूसरों को भी रोजगार दे रहा है। एग्रीक सैंटर युवा उद्यमियों को उनके प्रोजेक्ट स्थापित करने में सरकार व विभिन्न संस्थानों से ग्रांट दिलवाने में व बैंक से वित्तीय सहायता दिलवाने में हर संभव प्रयास कर रहा है।

कृषि मेले में एचएयू होम साइंस कॉलेज की स्टूडेंट्स ने मनके से बनी ज्वैलरीज, दीये, विंड चाइम की स्टॉल लगाई।

कृषि मेले में बीज जांच की तीन तकनीकों के बारे में बताते हुए वैज्ञानिक

सोलर सिस्टम सिंचाई यंत्रों ने किसानों का ध्यान खींचा

इस बार मेले में उन्नत बीजों के अलावा सोलर सिस्टम तकनीक से संचालित कई मशीनें ने किसानों को आकर्षित किया। इसमें सोलर वाटर पम्प, सोलर ऑपरेटेड ड्रायर, ई केन क्रशर सभी को अट्रेक्ट करते नजर आए। सोलर वाटर पम्प 15 हजार से 17 हजार लीटर तक पानी प्रति घंटे के हिसाब से खींच सकती है।

खरीदारों और सिंचाई यंत्र विक्रेताओं के बीच बिल को लेकर हुई अनबन

जहां एक तरफ किसानों में भारी उत्साह देखते बना तो वहीं सिंचाई यंत्र विक्रेताओं और खरीदारों के बीच अनबन हो गई। बिल ना मिलने पर किसान और विक्रेता के बीच विवाद हुआ। इसमें विक्रेता ने मशीन बेच दी। कहा कि किसान का चेहरा भूल गया और उससे कहासुनी करने लगे। हालांकि बाद में विक्रेता ने गलती भी स्वीकार की। कई अन्य किसान भी बिल देने की बात कहने लगे।

दूर-दराज से आए किसान बोले, खेती तनकीक जानने हर बार आते हैं

• 72 साल के हवा सिंह जींद से मेला देखने पहुंचे। वह पिछले 5 सालों से लगातार इस मेले में नई टेक्नोलॉजी को देखने पहुंचते हैं। • 65 साल के कर्म सिंह पानीपत बपोली से पहुंचे। बताते हैं कि वह हर बार सरसों और गेहूं के बीजों के लिए यहां पहुंचते हैं। साथ ही नई तकनीकों को सीख कर जाते हैं। • 52 साल के दारा सिंह राजस्थान हनुमानगढ़ से पहुंचे। वह फसलों को बीमारियों से बचाने के लिए नई विधियों को जानकर जाते हैं। • 75 साल के केवल सिंह साहूवाला से आए। वह 10 सालों से खेती तकनीकों को सीखने आ रहे हैं।

किसान खुद कर सकता है उन्नत बीज की पहचान

किसान दुकानों से उन्नत बीज खरीद कर तो ले जाते हैं। मगर कभी-कभी फसल उगने के वक्त उन्हें पता चलता है कि बीज सही से उग नहीं सका। ऐसे में किसानों ने रेत में, कागज के ऊपर और कागज के बीच में बीज टेस्टिंग की तकनीक को जाना। जिसमें डॉ. वीरेस मोर ने बताया कि बीजों की मोटाई के आधार पर किसान आसानी से टेस्ट कर सकता है। इसमें किसान मोटे बीज यानि मक्का गिन कर कुछ दाने रेत में बो कर पहले देख सकते हैं। मीडियम साइज के बीज कागज के बीच में रखकर जांच सकते हैं। कागज को भिगोते रहना है। सरसों जैसे छोटे बीज कागज के ऊपर ही रखकर जांचे जा सकते हैं। अगर 100 बीज बोने पर 80 तक बीज उग आते हैं तो बीज ठीक है।

छोटे किसानों को 40 से 150 किलो के मिनी ट्रैक्टर्स अट्रेक्ट करते नजर आए

छोटे किसान या जिन्हें एक एकड़ तक में खेती करने का शौक है। ऐसे में छोटी जोत वाले किसान के लिए मेले में पहुंचा 40 किलो का मिनी ट्रैक्टर अट्रेक्ट करता नजर आया। इसके साथ ही 150 किलो का मिनी ट्रैक्टर जिसे आसानी से बड़ी खेती में भी प्रयोग किया जा सकता है। इस ट्रैक्टर से एक से डेढ़ घंटे में एक एकड़ खेत की जुताई की जा सकती है। इसके लिए गाडेनिंग के लिए ब्रश कटर भी खास रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम दैनिक भास्कर

दिनांक 12.9.2019 पृष्ठ सं. 7 कॉलम 2-4

एचएयू में जल संरक्षण थीम पर दो दिवसीय कृषि मेले का शुभारंभ

पहले दिन 36 हजार किसान आए मेले में, 46.33 लाख का बीज, 1 लाख रु. के फलदार पौधे खरीदे

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरणसिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में जल संरक्षण (जनशक्ति फॉर जलशक्ति) थीम पर शुरू हुए कृषि मेले के पहले दिन किसानों में उत्साह देखने को मिला। न्यू टेक्नोलॉजी की नॉलेज लेने के लिए पहले दिन करीब 36 हजार से ज्यादा किसानों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। इसमें किसानों को छोटी-बड़ी टेक्नोलॉजी अट्रेक्ट करती नजर आई। जिसके लिए हिसार ही नहीं बल्कि आसपास के राज्य उत्तरप्रदेश, राजस्थान से किसानों की भी भागीदारी देखने को मिली। मेले में आगामी रबी फसलों के बीजों के लिए किसानों में भारी उत्साह देखा गया। किसानों ने गेहूं, जौ, सरसों, तौरिया, चना, मेथी, मसूर, बरसीम, जई, तथा मक्का की उन्नत किस्मों के लगभग 46.33 लाख रुपए के बीज खरीदे। साथ ही 1 लाख रुपए के फल वाले पौधे व 37 हजार से ज्यादा कृषि साहित्य भी खरीदा। उन्होंने नए उन्नत बीजों, कृषि विधियों, सिंचाई यंत्रों, कृषि मशीनरी किसानों को अट्रेक्ट करती नजर आई। मेले में मिट्टी व पानी जांच सेवा का लाभ उठाते हुए किसानों ने मिट्टी के 99 तथा पानी के 160 नमूनों की जांच करवाई। कृषि मेला का शुभारंभ हिसार के लोकसभा सांसद ब्रिजेंद्र सिंह ने किया। मेले में हिसार के विधायक डॉ. कमल गुप्ता विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में दो दिवसीय कृषि मेले (रबी) का हिसार के सांसद ब्रिजेंद्र सिंह ने शुभारंभ किया। विधायक डॉ. कमल गुप्ता विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम .... अमर उजाला ....

दिनांक 12.9.2019 .... पृष्ठ सं. ..... 1 ..... कॉलम ..... 2-8 .....

40% पानी बचाकर 28% बढ़ाया आलू उत्पादन

भूजल बचाने के लिए एचएयू ने सूक्ष्म स्प्रिंकलर सिंचाई की शुरू, विश्वविद्यालय के मेला ग्राउंड में दो दिवसीय रबी कृषि मेले का सांसद ने किया शुभारंभ

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। प्रदेश के 128 में से 78 ब्लॉक भूजल स्तर के डार्क जोन में आ चुके हैं, यानी यहां जमीन से जरूरत से ज्यादा पानी निकाला गया। पानी बचाने के लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग ने सीधे पौधों की जड़ों में पानी देकर पानी बचाने के साथ उत्पादन बढ़ाने में भी कामयाबी हासिल की है। विभाग ने आलू की फसल में सीधे पानी लगाने की बजाये सूक्ष्म स्प्रिंकलर विधि से पौधों को पानी दिया। इससे न केवल पहले की अपेक्षा 40 फीसदी पानी की बचत हुई है, बल्कि आलू के उत्पादन में भी 28 फीसदी तक बढ़ोतरी हुई है। इस तकनीक से जमीन में आलू तक पानी नहीं पहुंच पाया, जिससे आलू की बाहरी सतह खराब नहीं हुई और उसका रंग भी साफ रहा। इसी तकनीक से अब अन्य सब्जियों के प्रोजेक्ट भी विश्वविद्यालय में लगाए गए हैं, जिनके बेहतर परिणाम की उम्मीद है। विश्वविद्यालय के मेला ग्राउंड में बुधवार को दो दिवसीय रबी कृषि मेले का शुभारंभ हुआ। इस मेले में बड़ी संख्या में किसान स्प्रिंकलर सिंचाई और इससे बढ़ने वाले उत्पादन से संबंधित जानकारी लेते नजर आए। इस मेले की थीम जल संरक्षण ही रखी गई थी।

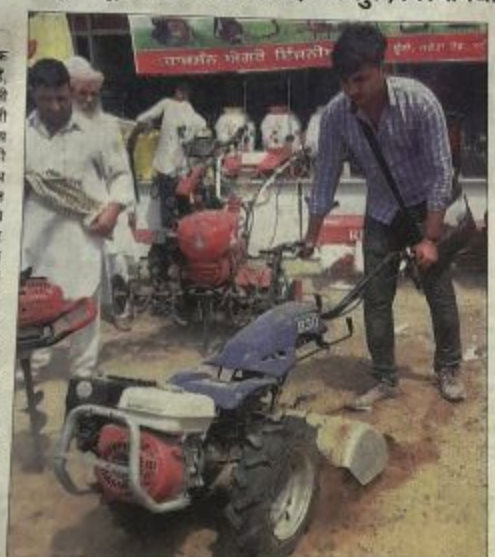

कृषि मेले में किसानों को कृषि यंत्र चलाकर दिखाता युवक। - अमर उजाला

मेले में आए 36 हजार से अधिक किसान, 47 लाख के खरीदे बीज

एचएयू में आयोजित दो दिवसीय कृषि मेले के पहले दिन बुधवार को प्रदेश के विभिन्न जिलों के अलावा अन्य प्रदेशों से भी किसानों ने शिरकत की। विवि के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आरएस हुड्डा ने बताया कि मेले में पहले दिन 36 हजार से अधिक किसानों की उपस्थिति दर्ज की गई। इस दौरान किसानों ने गेहूं, जौ, सरसों, तोरिया, चना, मेथी, मसूर, बरसीम, जई, और मक्का की उन्नत किस्मों के लगभग 46.33 लाख रुपये के बीज, एक लाख पांच हजार रुपये के फल वाले पौधे और 37 हजार रुपये का कृषि साहित्य खरीदा।

मिट्टी के 99 और पानी के 160 नमूनों की करवाई जांच

मेले में मिट्टी व पानी जांच का निशुल्क प्रबंध किया गया था। इसमें किसानों ने मिट्टी के 99 और पानी के 160 नमूनों की जांच करवाई। किसानों ने विश्वविद्यालय के अनुसंधान फार्म पर वैज्ञानिकों द्वारा उगाई गई फसलें भी देखीं और उनमें प्रयोग की गई प्रौद्योगिकी के साथ-साथ जल संरक्षण व प्रबंधन के बारे में जानकारी हासिल की।

देश के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में बढ़ेगा चने का उत्पादन, एचएयू के वैज्ञानिकों ने इजाद की नई किस्म

हिसार। देश के उत्तर-पश्चिमी हिस्से में अब चने का उत्पादन बढ़ेगा। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के दलहन विभाग के वैज्ञानिकों ने चने की एक नई किस्म इजाद की है। चने की एचसी-7 (एच12-55) नामक यह किस्म किसी भी अन्य किस्म की अपेक्षा 10 फीसदी अधिक उत्पादन देगी। यह किस्म देश के उत्तरी और पश्चिमी क्षेत्र में देरी से बिजाई करने वाले किसानों के लिए सबसे उपयुक्त साबित होगी। हालांकि किसानों को इस किस्म का बीज उपलब्ध होने में अभी एक साल का वक्त और लगेगा। विश्वविद्यालय के दलहन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एके छाबड़ा ने बताया कि वर्तमान में बहुत सी किस्में देश के किसानों के लिए हैं, जिनमें से अधिकांश का उत्पादन 8 से 10 क्विंटल प्रति एकड़ है। लेकिन उनके द्वारा तैयार की गई नई किस्म 10 फीसदी अधिक उत्पादन देगी। यह किस्म अन्य किस्मों की अपेक्षा 10 फीसदी ज्यादा रोग प्रतिरोधी है और इसमें उखेड़ा रोग कम आता है।

मूंग की नई किस्म से 15 फीसदी अधिक होगा उत्पादन : डॉ. एके छाबड़ा ने बताया कि विभाग की ओर से मूंग की नई किस्म भी रिलीज करने के लिए चिह्नित की जा चुकी है। मूंग की एमएच 1142 नामक इस नई किस्म से 10 से 15 फीसदी उत्पादन अधिक होगा। यह वैरायटी अब तक की मूंग की सबसे बेहतर वैरायटी में से एक है। इस किस्म को खरीफ के सीजन में बोया जा सकेगा। इस किस्म की एक और खास बात यह है कि इसकी रोग प्रतिरोधी क्षमता अधिक है और इसमें पीला पत्ता रोग नहीं आता।

250 से 300 क्विंटल प्रति एकड़ हो गया उत्पादन

सब्जी विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. वीके बत्रा और प्रिंसिपल साइंटिस्ट एके भाटिया ने बताया कि पहले नाले से पानी लगाते वक्त आलू का औसत उत्पादन 200 से 250 क्विंटल प्रति एकड़ रहता था। जो सूक्ष्म स्प्रिंकलर विधि से सिंचाई के बाद अब 250 से 300 क्विंटल तक पहुंच गया है। नाले से पानी देने से आलू पर बहुत अधिक पानी लगता था, जिससे उसके लैंटिसेल बड़े होकर उस पर दाग बना देते थे। इस तकनीक से आलू की स्किन को पानी नहीं लगने से लैंटिसेल नहीं बनते और आलू की साफ सुथरी रहती है।

22 में से 19 जिलों में 20 से 60 मीटर नीचे जा चुका भूजल स्तर

बतौर मुख्य अतिथि सांसद बृजेंद्र सिंह ने कृषि मेले का शुभारंभ किया। उन्होंने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि कुल जल का 85 से 90 प्रतिशत हिस्सा खेती कार्यों में उपयोग किया जा रहा है। फव्वारा सिंचाई, टपका सिंचाई व अन्य जल संरक्षण तकनीक का प्रयोग करके कृषि कार्यों में कम जल का प्रयोग करके अधिक पैदावार ली जा सकती है। हरियाणा के 22 जिलों में से 19 जिले ऐसे हैं, जिनमें भूमिगत जल का स्तर 20 से 60 मीटर नीचे जा चुका है। हरियाणा के 128 में से 78 ब्लॉक डार्क जोन में आ चुके हैं, इन ब्लॉक्स में भूमिगत जल का जरूरत से ज्यादा दोहन हुआ है। वर्तमान में पानी का खेती में सदुपयोग व अन्य तकनीक जिनके द्वारा कम पानी से अधिक पैदावार ली जा सकती है, जो बहुत ही आवश्यक है।

एक किलो चावल पैदा करने में लगता है 5300 लीटर पानी

सांसद बृजेंद्र सिंह ने कहा कि एक किलो चावल पैदा करने में लगभग 5300 लीटर पानी प्रयोग होता है, इसलिए हमें फसल चक्र में ऐसी फसलों को शामिल करना होगा, जो कम पानी से अधिक पैदावार दे सकें। इससे हम राज्य के जल संसाधनों को लंबे समय तक बनाए रख सकते हैं। उन्होंने कहा कि किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए खाद्यान्न उत्पादन के साथ बागवानी, पशुपालन, सब्जी उत्पादन, मछली पालन आदि को भी शामिल करना होगा।

कृषि मेले में स्टॉल का निरीक्षण करते सांसद बृजेंद्र सिंह, विधायक डॉ. कमल गुप्ता, एचएयू के कुलपति प्रो. केपी सिंह व अन्य। - अमर उजाला

विधायक से सवाल करने लगे किसान तो पुलिस ने रोका

मेले में बतौर विशिष्ट अतिथि पहुंचे विधायक डॉ. कमल गुप्ता ने किसानों के हित में सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं के बारे में बताया। विधायक फसल बीमा योजना, भावांतर भरपाई योजना, प्रधानमंत्री किसान सम्मान योजना, मेरी फसल मेरा ब्योरा आदि के बारे में बता रहे थे, तभी दो किसान खेतों में पानी नहीं आने और सरसों की खरीद नहीं होने को लेकर सवाल करने के लिए उठाए। लेकिन उन्हें पुलिस वालों ने उन्हें बीच में ही रोक दिया। विधायक ने किसानों को राज्य के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा चलाई जा रही मृदा स्वास्थ्य कार्ड स्कीम का अधिक से अधिक लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया।

सब्जी विज्ञान विभाग की स्टॉल पर जानकारी लेते किसान। - अमर उजाला

जल प्रबंधन पर ध्यान नहीं दिया तो होगी पानी की किल्लत

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. केपी सिंह ने कहा कि फसलों के उत्पादन में विभिन्न आधुनिक तकनीक अपनाकर जल को बचाया जा सकता है, जिसमें मुख्य रूप से फव्वारा सिंचाई, टपका सिंचाई व पाइप लाइन द्वारा सिंचाई करना शामिल है। नाली विधि द्वारा सिंचाई से अधिक पानी खर्च होता है यदि इसकी जगह पाइप लाइन द्वारा कम्पल सिंचाई की व्यवस्था अपनाकर काफी मात्रा में बहुमूल्य जल को बचाया जा सकता है। यदि समय रहते हमने जल संरक्षण व जल प्रबंधन पर ध्यान नहीं दिया तो आने वाले कुछ साल बाद पानी की भारी किल्लत होगी, भूमिगत जल स्तर की मात्रा व गुणवत्ता में भारी गिरावट होगी और इसके दुष्परिणाम होंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम दैनिक भूमि
दिनांक 12.9.2019 पृष्ठ सं. 11 कॉलम 1-8

माइक्रो स्प्रिंकलर से उगाए आलू, 40 प्रतिशत पानी की बचत

यशपाल सिंह ▶▶ हिसार

प्रदेश में गिरते भूजल स्तर को देखते हुए हकृवि के सब्जी विज्ञान विभाग ने सूक्ष्म सिंचाई की तकनीक के जरिए आलू की फसल उगाई। यह फसल माइक्रो स्प्रिंकलर विधि के जरिए उगाई गई। इस तरह से प्रति एकड़ आलू की फसल में करीब 40 प्रतिशत पानी की बचत हुई। जबकि पैदावार भी 28 से 40 प्रतिशत तक बढ़ी है। इसका कारण सिंचाई जल के बिल्कुल फसल के ऊपरी व जड़ों तक पहुंचने के चलते हुआ है।

■ पैदावार भी 28 से 40 प्रतिशत तक बढ़ी

सिंचाई की आम तकनीक के जरिए सीधे खेत में नाली के जरिए पानी देने की अपेक्षा सूक्ष्म सिंचाई तकनीकों के जरिए हर एक सब्जी की फसल में पानी की बचत हो सकती है। सब्जी विज्ञान विभाग द्वारा इस तरह की तकनीकें अपनाकर प्याज, लौकी व अन्य फसलें भी ली गई हैं। इन तकनीकों के चलते पानी की बचत तो हुई है इसके साथ ही पैदावार में भी अपेक्षाकृत बढ़ोतरी दर्ज की गई है।

क्या है माइक्रो स्प्रिंकलर विधि

माइक्रो स्प्रिंकलर विधि एक किस्म से फव्वारा सिंचाई की विधि है। सब्जी की फसलों के बीच में पाइप डालकर छोटे छोटे फव्वारों के जरिए खेत में सिंचाई की जाती है। टपका विधि की तरह फसलों की जड़ तक पानी जाने के साथ ही ऊपरी सतह पर छोटे फव्वारों के जरिए पानी का छिड़काव होता है। एक घंटे में 70 लीटर चाहिए पानी सूक्ष्म स्प्रिंकलर विधि के जरिए आलू के खेत में 6.48 वर्ग मीटर क्षेत्र में स्प्रिंकलर स्थापित किया गया। इस विधि के जरिए 70 लीटर पानी का छिड़काव प्रति घंटे के हिसाब से किया गया। फव्वारे पौधों की ऊंचाई से ऊपर स्थापित किए जाते हैं। इस विधि के जरिए दो घंटे प्रतिदिन सिंचाई की जाती है। अक्टूबर व नवंबर माह में आलू की फसल में 3 दिन और दिसंबर व जनवरी में 4 दिन के अंतराल पर पानी दिया गया। फरवरी माह में खुदाई से 15 दिन पहले पानी देना बंद कर देना चाहिए।

सब्जियां तैयार की

सूक्ष्म स्प्रिंकलर विधि के जरिए सिंचाई से सब्जियां तैयार की है। आलू की फसल भी ली है। इस विधि से 40 प्रतिशत तक पानी की बचत हुई और पैदावार भी 28 से 40 प्रतिशत बढ़ी।
-डॉ. एके भाटिया, वैज्ञानिक, सब्जी विज्ञान विभाग, हकृवि

हिसार। सूक्ष्म स्प्रिंकलर विधि का मॉडल।

आलू का कलर भी बदला

सूक्ष्म स्प्रिंकलर के जरिए सिंचाई करने से पैदा हुए आलू का रंग भी अलग है। पारंपरिक सिंचाई से तैयार आलू जहां सफेद रंग में ज्यादा है, वहीं स्प्रिंकलर विधि से तैयार आलू का कलर मटमैला लाल है। इसमें चमक भी ज्यादा होती है। स्प्रिंकलर के जरिए प्रति एकड़ करीब 25 से 40 प्रतिशत पैदावार भी बढ़ी है।

मलेरिया से बचाएगा कोप फ्रूट

हकृवि ने तैयार किया नया कोप फ्रूट मलेरिया और शुगर जैसे रोगों से हमारी रक्षा करेगा। पंजाब के अबोहर तथा होशियारपुर क्षेत्र में इसकी खेती ज्यादा होती है। कोप फ्रूट में ग्लूकोसाइट की मात्रा ज्यादा है जो मलेरिया जैसे रोगों से लड़ने में सक्षम होती है। इस फ्रूट में शुगर की मात्रा भी कम है। इसके कारण इस फल का जूस शुगर के रोगियों के लिए भी कारगर है। यो फ्रूट का जूस नीबू और अनार के साथ तैयार किया जा सकता है। हकृवि में फिलहाल इस फ्रूट पर रिसर्च चल रहा है। फ्रूट की मार्केट उसी ज्यादा विकसित नहीं है। दिल्ली और पंजाब में ही फ्रूट बिकता है। प्रति एकड़ इसकी पैदावार 50 क्विंटल तक है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ..... हरियाणा की आवाज .....

दिनांक 12.9.2019 पृष्ठ सं. ..... 8 ..... कॉलम 1-5 .....

सांसद ब्रिजेंद्र सिंह ने किया कृषि मेले का उद्घाटन

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आज आरंभ हुए दो दिवसीय कृषि मेला (रबी) का हिसार के लोकसभा सांसद ब्रिजेंद्र सिंह ने शुभारंभ किया। मेले में हिसार के विधायक डॉ. कमल गुप्ता विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस वर्ष विश्वविद्यालय द्वारा यह कृषि मेला जल संरक्षण (जनशक्ति फॉर जलशक्ति) विषय को लेकर आयोजित किया गया है।

मुख्य अतिथि श्री ब्रिजेंद्र सिंह ने किसानों को संबोधित करते हुये कहा कि कुल जल का 85 से 90 प्रतिशत हिस्सा खेती व खेती कार्यों में उपयोग किया जा रहा है। फव्वारा सिंचाई, टपका सिंचाई व अन्य जल संरक्षण तकनीक का प्रयोग करके कृषि कार्यों में कम जल का प्रयोग करके अधिक पैदावार ली जा सकती है। हरियाणा के 22 जिलों में से 19 जिले ऐसे है जिनमें भूमिगत जल का स्तर 20-60 मीटर नीचे जा चुका है। हरियाणा के 128 में से 78 ब्लॉक डार्क जोन में आ चुके है, इन ब्लॉक्स में भूमिगत जल का जरूरत से ज्यादा दोहन हुआ है। वर्तमान में पानी का खेती में सदुपयोग व अन्य तकनीक जिनके द्वारा कम पानी से अधिक पैदावार ली जा सकती हो बहुत ही आवश्यक है। उन्होंने बताया कि 1

किलो चावल पैदा करने में लगभग 5300 लीटर पानी प्रयोग होता है इसलिए हमें फसल चक्र में ऐसी फसलों को शामिल करना होगा जो कम पानी से अधिक पैदावार दे सकें। इससे हम राज्य के जल संसाधनों को लंबे समय तक बनाए रख सकते है। श्री ब्रिजेंद्र सिंह ने किसानों की आमदनी दोगुणा करने के लिए उनसे कृषि में विविधिकरण लाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि किसानों को आमदनी बढ़ाने के लिए खाद्यान्न उत्पादन के साथ बागवानी, पशुपालन, सब्जी उत्पादन, मछली पालन आदि को भी शामिल करना होगा।

हिसार के विधायक डॉ. कमल गुप्ता ने किसानों की आमदनी दोगुणा करने के लिए किसानों के हित में सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं पर प्रकाश डाला। इसमें मुख्य रूप से फसल बीमा योजना, भावांतर भरपाई योजना, प्रधानमंत्री किसान सम्मान योजना, मेरी फसल मेरा ब्यौरा शामिल है। उन्होंने किसानों की आमदनी दोगुणा करने के लिए खाद्य प्रसंस्करण को बढ़ाने और खेती की लागत को कम करने पर बल दिया। उन्होंने किसानों को राज्य के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा चलाई जा रही मृदा स्वास्थ्य कार्ड स्कीम का अधिक से अधिक लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया व बताया कि मृदा परीक्षण की रिपोर्ट के आधार पर फसलों में सिफारिश अनुसार उर्वरक व खादों का प्रयोग करें।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के.पी. सिंह ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि कृषि के विकास के लिए किसानों और कृषि वैज्ञानिकों के बीच तालमेल बहुत आवश्यक है। कृषि मेला का मकसद भी यही है कि किसान कृषि वैज्ञानिकों से मिलकर नई कृषि प्रौद्योगिकी की जानकारी ले सकें और अपनी कृषि संबंधी समस्याओं का उनसे समाधान प्राप्त कर सकें। उन्होंने कहा कि फसलों के उत्पादन में विभिन्न आधुनिक तकनीक अपनाकर जल को बचाया जा सकता है जिसमें मुख्य रूप से फव्वारा सिंचाई, टपका सिंचाई व पाइप लाइन द्वारा सिंचाई करना शामिल है। नाली विधि द्वारा सिंचाई से अधिक पानी खर्च होता है यदि इसकी जगह पाइप लाइन द्वारा फसल सिंचाई की व्यवस्था अपनाकर काफी मात्रा में बहुमूल्य जल को बचाया जा सकता है। यदि समय रहते हमने जल संरक्षण व जल प्रबंधन पर ध्यान नहीं दिया तो आने वाले कुछ सालों बाद पानी की भारी किल्लत होगी, भूमिगत जल स्तर की मात्रा व गुणवत्ता में भारी गिरावट होगी और इसके दुष्परिणाम होंगे। उन्होंने आगे बताया कि कृषि क्षेत्र में युवाओं के लिए स्वरोजगार पैदा करना समय की मांग है। छोटे-बड़े कृषि आधारित उद्योगों का जाल बिछना चाहिए ताकि ज्यादा से ज्यादा युवाओं को मौका मिले।

विश्वविद्यालय ने इस दिशा में ग्रामीण युवाओं को उद्यमशीलता हेतु प्रेरित करने के लिए एग्री बिजनेस इन्क्यूबेशन सैंटर स्थापित किया है जो कि ग्रामीण युवा रोजगार मांगने की बजाये रोजगार पैदा करने वाला बने। कुलपति प्रो. सिंह ने एक ऐसे युवा किसान का उदाहरण देते हुये बताया जिसने एबीक सैंटर से जुड़कर बायोफर्टिलाइजर पर काम शुरू करके अपनी कंपनी का टर्न ओवर एक करोड़ से अधिक का कर लिया है तथा आगे पांच करोड़ तक का टर्न ओवर करने का लक्ष्य है। अब वह युवा स्वरोजगार अपनाकर दूसरों को भी रोजगार दे रहा है। एबीक सैंटर युवा उद्यमियों को उनके प्रोजेक्ट स्थापित करने में सरकार व विभिन्न संस्थानों से ग्रांट दिलवाने में व बैंक से वित्तीय सहायता दिलवाने में हर संभव प्रयास कर रहा है।